भक्तामरस्तोत्र

[मानव समाज के कल्याण के निमित्त
४८ श्लोकों में ऋद्धियों, मन्त्रों और
यन्त्रोंका अनुपम संग्रह]

—संग्राहक—

श्रीनरेन्द्रकुमार जैन

५९, गाँधी रोड,

देहरादून

भक्तामरस्तोत्र

[मानव समाज के कल्याण के निमित्त ४८ श्लोकों में ऋद्धियों, मन्त्रों और यन्त्रोंका अनुपम संग्रह]

—संग्राहक—

श्रीनरेन्द्रकुमार जैन

५९, गाँधी रोड,

देहरादून

परिचय

यह भक्तामरस्तोत्र सभी मुमुक्षुओं, जिज्ञासुओं, साधकों, गृहस्थों तथा अनेक प्रकार के रोग–शोक–दुःखोंसे पीडित जनोंके लिये संजीवन औषधि है। इसके अन्तमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किस प्रकारके कष्टकी निवृत्तिके लिये किस ऋद्धि और मन्त्रका जप, किस विधि-विधानके साथ, कितना करना चाहिए और किस दोष या विपत्तिके निवारणके लिये कौनसा यन्त्र अपने पास रखना चाहिए।

इस स्तोत्रमें आदि जिनेन्द्र श्री ऋषभदेवजी की महिमा अनेक प्रकारसे ४८ संस्कृत श्लोकोंके माध्यमसे वर्णित की गई है जिनका हिन्दी पद्यानुवाद, हिन्दी गद्यानुवाद और अँगरेजी पद्यानुवाद भी साथ-साथ पाठकों और साधकोंकी सुविधाके लिये दे दिया गया है।

प्रत्येक श्लोकके साथ एक एक ऋद्धि और एक एक मन्त्र है जिनकी अपनी विधि तथा उनके फल अन्तमें दे दिए गए हैं जिससे भक्तगण या साधक लोग अपनी अपनी कामनाकी सिद्धिके लिये उस विषयसे सम्बद्ध मन्त्र और यन्त्रका यथाविधि उपयोग और प्रयोग कर सकते हैं।

मन्त्र और यन्त्रके प्रयोगके लिये आचारकी शुद्धि और प्रयोग-विधिका सम्यक् रीतिसे पालन नितान्त आवश्यक है क्योंकि विधिका पालन ठीक प्रकारसे न होनेपर उस अनुष्ठानका इष्ट फल प्राप्त नहीं होता। जो अपने लिये

अर्थ—जो भक्तिवश झुकते हुए (नमस्कार करते हुए) देवों के मुकुटों की रत्न-कान्ति को दीप्तिमान करते हैं, पाप-अन्धकारको दूर करते हैं, तथा कर्मयुग के प्रारम्भ में संसार-समुद्र में भटकनेवाली जनता की रक्षा करने वाले हैं, ऐसे जिनेन्द्र भगवान के चरणों को प्रणाम करके मैं भी उस आदिनाथ (ऋषभनाथ) भगवान की स्तुति करता हूँ, जिसका स्तवन समस्त शास्त्रों के जानकार, परम बुद्धिमान इन्द्रों ने त्रिलोकवर्ती (तीन लोक के) जीवों का मन मोहित करनेवाले बड़े सुन्दर स्तोत्रों से किया है ॥ १–२ ॥

(प्रथम श्लोक) ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्र फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ।

मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

(दूसरा श्लोक) ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहिजिणाणं ।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः ।

I pay homage to Jinendra,
Who captivated minds of Universe,
Worshipped by Lords of gods,
Endowed with wisdom of shastras. 1
I bow to the feet of Jina
Which freed men from worldliness.
I bow to the feet of Jina
Illuminating gods, dispelling sins. 2

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ,
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३॥

विबुधवंद्यपद ! मैं मति-हीन, हो निलज्ज थुति मनसा कीन।
जल-प्रतिबिम्ब बुद्ध को गहै, शशि-मण्डल बालक ही चहै ॥

अर्थ—हे विद्वानों द्वारा पूज्य-चरण भगवन् ! मैं आपकी स्तुति करने-योग्य बुद्धि न रखता हुआ भी लज्जा छोड़कर आपकी स्तुति करने के लिये वैसे ही तत्पर हुआ हूँ जैसे पानी में प्रतिबिम्बित (परछांई वाले) चन्द्रमा को बच्चे के सिवाय अन्य कौन बुद्धिमान मनुष्य पकड़ना चाहता है ? (कोई नहीं) ॥ ३ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो परिमोहिजिणाणं ।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः सर्वसिद्धिदायकेभ्यो नमः स्वाहा ।

Thou, worshipped by gods,
Unwise try to eulogise,
Like infant vainly grasping
Moon, reflected in water. 3

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्रशशाङ्ककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्त - काल - पवनोद्धत - नक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

गुनसमुद्र तुम गुन अविकार, कहत न सुरगुरु पावें पार।
प्रलय - पवन उद्धत जलजन्तु, जलधि तिरै को भुज बलवन्तु ॥

अर्थ—हे गुणसागर प्रभो ! आपके चन्द्र-समान उज्ज्वल गुणों को वृहस्पति के समान बुद्धिमान विद्वान् भी अपनी बुद्धि से वैसे ही नहीं कह सकता जैसे कि प्रलय समय के प्रबल वायु से उद्वेलित और मगरमच्छों से भरे हुए समुद्र को अपनी भुजाओं से कौन पार कर सकता है ? यानी कोई भी नहीं ॥ ४ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहिजिणाणं ।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलयात्रा-जलदेवताभ्यो नमः स्वाहा ।

Thou art ocean of virtues,
Even the wisest cannot explain
Just as an ocean with fury
Can't be crossed with hands. 4

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाऽभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

सो मैं शक्तिहीन थुति करूँ, भक्ति भाववश कछु नहिं डरूँ ।
ज्यों मृगि छौना पालन-हेत, मृगपति सन्मुख जाय अचेत ॥

अर्थ—हे मुनिनाथ भगवन्! फिर भी शक्तिहीन मैं, भक्तिवश आपकी स्तुति करने के लिये वैसे ही तैयार हुआ हूँ जिस तरह सिंह द्वारा पकड़े गये अपने छौने को छुड़ाने के लिये बच्चे के मोहवश हिरनी अपनी अल्पशक्ति का विचार न करके सिंह का सामना करने के लिये जा पहुँचती है ॥ ५ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं ।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्वसङ्कटनिवारणेभ्यः सुपार्श्वयक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा ।

In devotion without power
Determined I'm to eulogise,
Like a doe facing a lion
To protect her fawn out of affection. 5

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिल: किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु: ॥६॥

मैं शठ सुधी-हँसन को धाम, मुझ तुव भक्ति बुलावै राम।
ज्यों पिक अम्ब-कली परभाव, मधुऋतु मधुर करै आराव ॥

अर्थ—भगवन् ! मैं बुद्धिमानों के उपहास करने - योग्य अल्पज्ञ हूँ, फिर भी आपकी भक्ति ही मुझे आपका स्तवन करने को प्रेरित करती है। वसन्त ऋतु में जो कोयल मीठी वाणी बोलती है उसका कारण आम के वृक्षों पर आने वाली बौर (मंजरी) ही होती है ॥ ६ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः हं सं थ थ थ ठः ठः सरस्वति भगवति बिद्याप्रसादं कुरु कुरु स्वाहा।

Though unwise I am, yet my devotion
Forces me to be vocal,
Like cuckoo's song coming
Due to charming mango blossoms. 6

त्वत्संस्तवेन भवसन्तति-सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु:
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

तुम जस जंपत जन छिन माहिं, जनम जनम के पाप नसाहिं ।
ज्यों रवि उगै फटै तत्काल, अलिवत् नील निशा-तम-जाल ॥

अर्थ—हे नाथ ! आपकी स्तुति करने से जीवों के अनेक भवों के संचित पाप-कर्म क्षण भर में वैसे ही क्षय हो जाते हैं जैसे कि प्रातः समय सूर्य की किरणों से भौंरे की तरह काला, जगत में फैला हुआ रात्रि का अन्धकार तत्काल छिन्न भिन्न हो जाता है ॥ ७ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं ।

मंत्र—ॐ ह्रीं हं सं श्रां श्रीं क्रौं क्लीं सर्वदुरितसङ्कट-क्षुद्रोपद्रवकष्टनिवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

As gloom of dark nights
Is dispelled by sun's rays,
So sins and cycle of births
Are dispelled by eulogies to Thee. 7

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु,
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ।। ८ ।।

तुव प्रभावतैं कहूँ विचार, होसी यह थुति जन-मनहार ।
ज्यों जल कमल-पत्र पै परै, मुक्ताफल की द्युति विस्तरै ।।

अर्थ—हे नाथ ! आपके स्तवन की ऐसी महिमा मानकर मैं अल्प-बुद्धि भी आपकी स्तुति प्रारम्भ करता हूँ कि आपके प्रभाव से यह स्तुति सत्पुरुषों का चित्त वैसे ही आकर्षित करेगी जैसे कमल के पत्ते पर पड़ी हुई पानी की बूंद मोती सरीखी शोभायमान होती है ।। ८ ।।

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो पादाणुसारिणं ।
मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असिआउसा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा । ॐ ह्रीं लक्ष्मणरामचन्द्रदेवाय नमो नमः स्वाहा ।

O Lord ! with my little intelligence,
I begin this praise for thee,
Which through your magnanimity
Will shine like water drop on lotus leaf. 8

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥९॥

तुम गुन महिमा हत दुख-दोष, सो तो दूर रहो सुखपोष ।
पापविनाशक है तुम नाम, कमल विकासी ज्यों रविधाम ॥

अर्थ—हे विभो ! सर्व दुःख-दोषनाशिनी आपकी स्तुति की बात ही क्या, केवल आपका नाम ही लेना जगत के पाप वैसे ही नष्ट कर डालता है जिस तरह सूर्य बहुत दूर रहता हुआ भी प्रकाश करता हुआ कमलों के वन में कमल के फूलों को विकसित कर देता है ॥ ९ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो संभिण्णसोदराणं ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं भ्वीं रः रः हं हः नमः स्वाहा ।

Eulogy to thee destroys all blemishes,
Thy name destroys all sins
Like the sun though far off
Unfolds the lotuses in lakes. 9

नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूतनाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

नहिं अचंभ जो होंहिं तुरंत, तुमसे तुम, गुण बरनत सन्त ।
जो अधीन को आप समान, करै न, सो निन्दित धनवान ॥

अर्थ—हे जगद्-भूषण जगदीश्वर ! संसार में जो भक्त पुरुष आपके गुणों का कीर्तन करके आपका स्तवन करते हैं, वे यदि आपके समान ही भगवान् बन जाते हैं तो इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं है क्योंकि वह स्वामी भी किस काम का, जो अपने दास को अपने समान न बना सके, सदा नौकर ही बनाये रक्खे ? ॥ १० ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धीणं ।

मन्त्र—जन्मसध्यानतो जन्मतो वा मनोत्कर्षधृतावादिनोर्यानाच्चान्ताभावे प्रत्यक्षा बुद्धान्मनो ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रं श्रः सिद्धिबुद्धिकृतार्थो भव भव वषट् सम्पूर्णं स्वाहा ।

By eulogies and by devotion
One becomes equal to thee,
Like a good master, who
Allows his servant to equal him. 10

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ॥११॥

इकटक जन तुमको अविलोय, अवर विषै रति करै न सोय।
को करि क्षीरजलधि जल पान, क्षार नीर पीवै मतिमान॥

अर्थ—हे भगवन्! टकटकी लगाकर आपका दर्शन कर लेने पर मनुष्य के नेत्र अन्य किसी को देखने में उसी तरह सन्तुष्ट नहीं होते जिस तरह चन्द्र के समान उज्ज्वल क्षीरसागर का मीठा जल पीकर खारे समुद्र का खारा पानी कौन पीना चाहेगा हैं, अर्थात् कोई नहीं ॥ ११ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धीणं।

मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रीं कुमतिनिवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा।

Having seen you intently
One does not see others.
Having sipped sweet milk juice
Who cares for saline water. 11

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

पूरन चंद-जोति छबिवंत, तुम गुन तीन जगत लंघंत।
एक नाथ त्रिभुवन आधार, तिन विचरत को करै निवार ॥

अर्थ—हे भगवन् ! पूर्णचन्द्र समान के उज्ज्वल आपके गुण तीनों लोकों को भी लांघ गये हैं सो ठीक ही है क्योंकि जो एक त्रिलोकीनाथ के ही आश्रय रहते हैं उनको यथेच्छ विहार करते हुए कौन रोक सकता है ? (कोई नहीं) ॥ १४ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं ।

मंत्र—ॐ नमो भगवति गुणवति महामानसी स्वाहा ।

Thy virtues like full moon
Bestrides the three worlds all.
Who can resist one's will
Who takes resort in Thee. 14

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
 नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
 किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

जो सुरतिय विभ्रम आरम्भ, मन न डिग्यो तुम तो न अचम्भ ।
अचल चलावै प्रलय समीर, मेरु शिखर डगमगै न धीर ॥

अर्थ—हे प्रभो ! इसमें क्या आश्चर्य की बात है कि सुन्दरी देवाङ्गनाओं का हाव-भाव देख कर भी आपका मन जरा भी विकृत नहीं हुआ क्योंकि प्रलयकाल के जिस प्रबल वायु से अन्य पर्वत चल विचल हो जाते हैं उस वायु से क्या कभी मन्दराचल (सुमेरु पर्वत) का शिखर भी चलायमान होता है ? (कभी नहीं) ॥ १५ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं ।

मंत्र—ॐ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी वज्रशृङ्खला मानसी महामानसी स्वाहा ।

Thou were never perturbed
 By the fair celestial damsels,
Like Mandar mountain
 Unshaken by doomsday tempests. 15

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्वमपि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥

बाती धूमरहित गतनेह, परकाशै त्रिभुवन घर एह ।
वात-गम्य नाहीं परचण्ड, अपर दीप तुम बलो अखण्ड ॥

अर्थ—हे त्रिभुवनदीपक ! (साधारण दीपक तो तेल और बत्ती से जलता है, धुआँ देता है, थोड़े स्थान में प्रकाश करता है और वायु के झकोरे से बुझ जाता है परन्तु) आप ऐसे अनोखे दीपक हैं कि न तो आपको तेल और बत्ती की आवश्यकता होती है, न आपसे काला धुआँ निकलता है और न पर्वतों को भी हिला देनेवाले वायु से आपकी ज्योति बुझ सकती है तथा आप तीनों लोकों को अपनी ज्योति से प्रकाशित कर देते हैं ॥ १६ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं ।

मंत्र—ॐ नमः सुमंगला सुसीमा नाम देवी सर्वसमीहितार्थं वज्रशृङ्खलां कुरु कुरु स्वाहा ।

Thou art an unparalleled universal lamp,
Devoid of smoke, sans wick and oil,
Illuminating all the three worlds.
Not effected even by storms. 16.

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्ध-महाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥

छिपहु न लुपहु राहु की छाँहि, जग-परकाशक हो छिन माँहि ।
घन-अनवर्त दाह विनिवार, रवि तैं अधिक धरो गुणसार ॥

अर्थ—हे मुनिनाथ ! आप सूर्य से भी अधिक महिमाशाली हैं क्योंकि आप न तो कभी अस्त होते हैं, न राहु के ग्रहण में आते हैं और न बादल आपका प्रभाव रोक सकते हैं तथा आप अपनी ज्ञान-ज्योति द्वारा एक साथ तीनों लोकों को प्रकाशित करते हैं। (सूर्य तो चार पहर पीछे अस्त हो जाता है, उसको राहु ग्रहण कर लेता है, बादलों से उसका प्रकाश रुक जाता है तथा वह सीमित क्षेत्र में ही प्रकाश भी करता है) ॥ १७ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांगमहाणिमित्तकुसलाणं ।

मंत्र—ॐ नमो नामऊण अट्ठे मट्ठे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रपीडां जठरपीडां भञ्जय भञ्जय सर्वपीडासर्वरोगनिवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

O sage! Thou art brighter than the sun,
Not effected by eclipse or clouds,
Illuminating all the three worlds
All the time, the same moment. 17

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति,
विद्योतयज्जगदपूर्व - शशाङ्कबिम्बम् ।।१८।।

सदा उदित विदलित मनमोह, बिघटित मेघ राहु अवरोह ।
तुम मुख कमल अपूरब चन्द, जगत विकाशी जोति अमन्द ।।

अर्थ—हे भगवन् ! महाकान्तिमान आपका मुखकमल अपूर्व अद्भुत चन्द्रमण्डल की तरह शोभित होता है क्योंकि वह सदा उदीयमान रहता है (कभी अस्त नहीं होता), मोह के अन्धकार को नष्ट करता है, राहु और बादलों से कभी छिपता नहीं है और समस्त जगत् को प्रकाशित करता रहता है ।। १८ ।।

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउणइड्ढिपत्ताणं ।
मंत्र—ॐ नमो भगवते जय विजय मोहय मोहय स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ।

Thy lotus-like countenance shining eternally,
Dispels all gloom of ignorance,
Not effected by clouds or Rahu,
Is a universe-illuminating spotless moon. 18

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमःसु नाथ ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥

निशदिन शशि रविको नहिं काम, तुम मुखचन्द्र हरै तम धाम ।
जो स्वभावतैं उपजे नाज, सजल मेघ तैं कौनहु काज ॥

अर्थ—हे नाथ ! आपके मुखचन्द्र द्वारा जब जनता का मोह-अज्ञान-अन्धकार नष्ट हो गया तो दिन के समय सूर्य और रात्रि के समय चन्द्रमा से कुछ प्रयोजन नहीं रहा। धान्य के पक जाने पर संसार में जल से भरे हुए बादलों की क्या आवश्यकता है ? ॥१९॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराण।
मंत्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यक्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा।

O Lord ! Thy face removes all darkness
No need of sun in day or moon in night.
No use of clouds with water store
After fields of paddy get ripened. 19

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

जो सुबोध सोहै तुम माहिं, हरि हर आदिक में सो नाहिं ।
जो द्युति महा रतन में होहि, काँच. खण्ड पावै नहिं सोय ॥

अर्थ—हे प्रभो ! जैसा पूर्ण ज्ञान आप में विद्यमान है वैसा हरि-हर आदि अन्य किसी में नहीं है । जिस तरह की महत्त्वपूर्ण कान्ति रत्नों में होती है वैसी कान्ति चमकीले कांच के टुकड़े में नहीं मिलती ॥२०॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं ।

मंत्र—ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः शत्रुभयनिवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा ।

O Lord ! Thy knowledge supreme
Never found so elsewhere,
Which shines like real gems
And not like glass though bright. 20

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥

नाराच छन्द

सराग देव देख मैं भला विशेष मानिया,
स्वरूप जाहि देख वीतराग तू पिछानिया ।
कछू न तोहि देख के जहाँ तुही विशेखिया,
मनोग चित्त चोर और भूल हू न पेखिया ॥

अर्थ—हे नाथ ! मैं समझता हूँ कि मैंने हरि-हर आदि देवों के जो दर्शन किये सो अच्छा हुआ, क्योंकि उन (रागी देवों) के देख लेने पर मेरा मन आप में सन्तुष्ट हो गया । आपके दर्शन कर लेने पर फिर कोई भी अन्य देव मेरा मन अपनी ओर आकृष्ट न कर सका ॥२१॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णासमणाणं ।

मंत्र—ॐ नमः श्री मणिभद्र जय विजय अपराजिते सर्व-सौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

O Lord ! I feel satisfied seeing Thee
After having seen all others.
No one else could attract me so
As Thou, when I came to Thee. 21

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्-
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

अनेक पुत्रवंतिनी नितम्बिनी सपूत हैं,
न तो समान पुत्र और माततैं प्रसूत हैं।
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि को गिनै,
दिनेश तेजवन्त एक पूर्व ही दिशा जनै॥

अर्थ—हे देव ! संसार में सैंकड़ों स्त्रियाँ सैंकड़ों पुत्र पैदा करती हैं परन्तु आपके समान पुत्र को आपकी माता ही उत्पन्न कर पाई है, अन्य कोई माता वैसे ही नहीं उत्पन्न कर सकती जैसे प्रभापुञ्ज सूर्य की किरणों को तो सभी दिशायें धारण करती हैं परन्तु उस सूर्य का उदय केवल पूर्व दिशा ही किया करती है ॥२२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं।

मंत्र—ॐ नमो श्री वीरेहिं जृम्भय जृम्भय मोहय मोहय स्तम्भय स्तम्भय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा।

Stars are found all around in the sky
But the sun rises only in the East.
Mothers give birth to sons daily
But none gave birth like you. 22

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-

मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।

त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,

नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पन्थाः॥२३॥

पुरान हो, पुमान हो, पुनीत पुण्यवान हो,

कहैं मुनीश अन्धकार नाश को सुभान हो।

महंत तोहि जानि के न होय वश्य काल के,

न और कोइ मोखपन्थ देय तोहि टाल के॥

अर्थ—हे मुनिनाथ! मुनिगण आपको महान् पुरुष, अन्धकारहारक निर्मल सूर्य कहते हैं। मुनिगण आपकी उपासना करके मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेते हैं। आपकी उपासना के सिवाय अन्य कोई मोक्ष का सुखदायी मार्ग है भी तो नहीं॥ २३ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं।

मन्त्र—ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थं मोक्षसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

O Lord! Sages call Thee supreme

Possessing effulgence of the sun.

On realising Thee, one conquers death,

No other path leads to Supreme Bliss. 23

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसङ्ख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ।।२४।।

अनन्त नित्य चित्त के अगम्य रम्य आदि हो,
असंख्य सर्वव्यापि विष्णु ब्रह्म हो, अनादि हो ।
महेश कामकेतु योग-ईश योग ज्ञान हो,
अनेक एक ज्ञानरूप शुद्ध सन्त मान हो ।।

अर्थ—हे स्वामिन् ! गणधरादिक आपको अव्यय (अविनाशी), विभु (ज्ञान द्वारा सर्वव्यापक), अचिन्त्य (पूर्णरूप से न जान सकने रूप), असंख्य (जिसके गुण न गिने जा सकें), आद्य (समस्त पूज्य देवों में प्रथम), ब्रह्मा (मोक्ष मार्ग के बनानेवाले), ईश्वर (समस्त आत्मविभूति के स्वामी या तीन लोक के नाथ), अनन्त (जिसका अंत न हो), अनङ्गकेतु (शरीर-रहित या अनुपम सुन्दर), योगीश्वर, योग-ज्ञाता आत्मशुद्धि की विधि जाननेवाले), अनेक (गुणों की अपेक्षा), एक (आत्मा की अपेक्षा), ज्ञान-रूप और पूर्ण निर्मल कहते हैं ।। २४ ।।

ऋद्धि— ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं ।

मन्त्र—ॐ नमो अरहंताणं स्थावरजंगमवायकृतिमं सकलविषं यद्भक्तेः अप्रणमिताय ये दृष्टिविषान्मुनीन्ते वड्ढमाणस्वामी सर्वहितं कुरु कुरु स्वाहा । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः आसिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा ।

O Lord ! Thou art Immutable, Omnipotent,
Incomprehensible, unnumbered, first Brahma,
Supreme lord Shiva and lord of yogis,
Saint of knowledge and all stainless. 24

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधा-
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ।
धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुही जिनेश बुद्ध है सुबुद्धिके प्रमानतैं,
तुही जिनेश शंकरो जगत्त्रयी विधानतैं ।
तुही विधात है सही सुमोख पंथ धारतैं,
नरोत्तमो तुही प्रसिद्ध अर्थके विचारतैं ॥

अर्थ—हे भगवन् ! आप हो 'बुद्ध' हैं क्योंकि आपकी बुद्धि या ज्ञान गणधर आदि विद्वानों तथा इन्द्र आदि से पूजनीय है । आप ही यथार्थ 'शङ्कर' हैं क्योंकि आप अपनी प्रवृत्ति तथा उपदेश से तीनों लोकों में शान्ति कर देते हैं । हे धीर ! आप ही सच्चे 'विधाता' हैं क्योंकि आपने मुक्ति मार्ग का विधान किया है और आप ही सबसे उत्तम होने के कारण 'पुरुषोत्तम' हैं ॥२५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं ।

मन्त्र—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा ॐ नमो भगवते जयविजयापराजिते सर्वसौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

Thou art Buddha adored by gods
Thou art Shankar leading to salvation.
Thou art Vidhata, O wise Lord !
Thou art Puroshottam doubtless, O God! 25

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,

तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।

तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,

तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥२६॥

नमो करूँ जिनेश तोहि आपदा-निवार हो,

नमो करूँ सुभूरि भूमिलोकके सिंगार हो।

नमो करूँ भवाब्धिनीरराशि-शोष हेतु हो,

नमो करूँ महेश तोहि मोखपंथ देतु हो॥

अर्थ—हे जिनेन्द्रदेव ! हे नाथ ! तीनों लोकों के संकटों को दूर करने वाले आपको मैं नमस्कार करता हूँ। जगत् के निर्मल अनुपम आभूषण स्वरूप आपको मैं प्रणाम करता हूँ। तीनों जगत् के स्वामी तुम्हें प्रणाम है और संसार समुद्र को सुखाने वाले आपको नमस्कार है ॥२६॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ।

मन्त्र—ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रं ह्रू परजनशान्ति-व्यवहारे जयं कुरु कुरु स्वाहा ।

I bow to Thee, O dispeller of sufferings,

Jewel of the earth, Lord of triverse.

O god ! humbly I bow to Thee,

Who dries the ocean of existence. 26

को विस्मयोऽत्र यदि नामगुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥२७॥

चौपाई

तुम जिन पूरण गुणगण भारे, दोष गर्व करि तुम परिहारे।
और देवगण आश्रय पाए, स्वप्न न देखे तुम फिर आए॥

अर्थ—हे मुनीश्वर ! इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं कि आप समस्त गुणों से परिपूर्ण हैं। राग, द्वेष, क्रोध, मान, काम, माया, लोभ आदि दोष अन्य देवों का आश्रय पाकर गर्वीले (घमण्डी) हो गये हैं, अतः वे दोष आपके पास कभी स्वप्न में भी नहीं आते ॥ २७ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं।

मन्त्र—ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी चक्रेणानुकूलं साधय साधय शत्रूनुन्मूलयोन्मूलय स्वाहा।

O God ! Thou art jewel and great
Despite having excellence and no blemish.
Others having attained only a portion
Feel inflated with false pride. 27.

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं
बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥

तरु अशोक तल किरन उदार, तुम तन शोभत है अधिकार।
मेघनिकट ज्यों तेज फुरंत, दिनकर दिपै तिमिर निहनंत ॥

अर्थ—भो भगवन् ! ऊँचे अशोक वृक्ष (प्रातिहार्य) के नीचे आपका निर्मल कान्तिमान शरीर वैसे ही बहुत शोभा देता है जैसे कि अन्धकार नष्ट करके किरण - सहित सूर्य-बिम्ब बादलों के पास शोभित होता है ॥ २८ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते जय विजय जृम्भय जृम्भय मोहय मोहय सर्वसिद्धिसम्पत्तिसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

O God ! Thou shinest like the sun
Removing darkness of black clouds.
Looketh excellently beautiful under Ashoka tree
Ever shining and lustrous bright. 28

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

सिंहासन मणि किरण विचित्र, तापर कंचन वरण पवित्र।
तुम तन शोभित किरण विथार, ज्यों उदयाचल रवि तमहार॥

अर्थ—हीरे, पन्ने, लाल, नीलम, पुखराज आदि अनेक प्रकार के रत्नों से जटित सिंहासन पर आपका सुवर्ण समान शरीर वैसे ही बहुत शोभा पाता है जैसे उन्नत उदयाचल के शिखर पर फैली हुई अपनी किरणों के साथ सूर्य का विम्ब शोभित होता है॥ २९ ॥

ऋद्धि—ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं ।

मन्त्र—ॐ णमो णमिउण पासं विसहरफुलिंगमंतो विसहर-नामरकारमंतो सर्वसिद्धिमीहे इह समरंताणमण्णेजागई कप्प-दुमच्चं सर्वसिद्धिः ॐ नमः स्वाहा ।

Thy gold - lustrous body shines on throne
Like the disc of the sun on summit
Variegated with rays of gems
On the mountains like a creeper. 29

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार—
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

कुन्द पुहुप सित चमर ढुरंत, कनक वरन तुम तन शोभंत।
ज्यों सुमेरु-तट निर्मल कांति, झरना झरै नीर उमगांति॥

अर्थ—हे प्रभो ! यक्षों द्वारा कुन्द पुष्प के समान सफेद चमर आप पर ढुरते समय आपका तपे हुए सोने के समान शरीर ऐसा शोभायमान होता है जैसे चन्द्र के समान निर्मल जल की धारा से सुवर्णमय सुमेरु पर्वत का ऊँचा तट (किनारा) सुशोभित होता है ॥ ३० ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं ।

मन्त्र—ॐ नमो अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रान् स्तम्भय स्तम्भय रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ।

O God ! thy lustrous body adored by yakshas
With chowries like kunda flowers bright,
Shines like streams of moon-like water
On the golden slopes of high Sumeru. 30

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त—
मुच्चैःस्थितं स्थगित - भानुकरप्रतापम् ।
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

ऊँचे रहैं सूर-दुति लोप, तीन छत्र तुम दिपैं अगोप ।
तीन लोक की प्रभुता कहैं, मोती झालर सों छबि लहैं ॥

अर्थ—हे ईश ! चन्द्रमा के समान कान्तिमान, सूर्य की धूप को रोकने वाले, मोतियों की झालर से शोभायमान, आपके ऊपर ऊँचे लगे हुए तीन छत्र आपकी तीन जगत् की प्रभुता को प्रकट करते हुए बहुत शोभा देते हैं ॥ ३१ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणपरक्कमाणं ।

मन्त्र—ॐ उवसग्गरं पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं विसहर-विसणिण्णासिणं मंगलकल्लाणआवासं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

On Thee, three umbrellas like moon
Beautified with pearls and emeralds,
Obstructing heat of the sun, proclaims
Thy supreme Lordship over three worlds. 31

गम्भीरताररवपूरितदिग्वभाग-
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ।
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

दुन्दुभि शब्द गहर गंभीर, चहुँदिश होय तुम्हारे धीर ।
त्रिभुवनजन शिव संगम करै, मानूँ जय जय रव उच्चरै ॥

अर्थ—हे परमात्मन् ! आकाश में अपनी गंभीर, तेज, मधुर ध्वनि-द्वारा समस्त दिशाओं को शब्दायमान करके, त्रिलोकवर्ती जीवों को शुभ संगम कराने वाला, आपकी जयध्वनि करता हुआ, आपके यश को घोषित करनेवाला आपका प्रातिहार्य-रूप दुन्दुभि बाजा बजता है ॥३२॥

ऋद्धि—ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणवंभचारिणं ।

मन्त्र—ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदोषनिवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

There sounds in the sky, celestial drum
Capable of bestowing glory and prosperity,
Proclaiming victory O Lord of Lords !
And supreme righteousness of Thy fame. 32

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात-

सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टिरुद्धाः ।

गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता,

दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

मन्द पवन गन्धोदक इष्ट, विविध कल्पतरु पुहुप सुवृष्ट।
मानो देव करैं दल सार, वचन आपके दिव्य अपार॥

अर्थ—हे नाथ ! आपके दिव्य वचनों की वर्षा ऐसी होती है मानो सुगन्धित जल-बिन्दुओं और मन्द पवन के साथ मन्दार, सुन्दर नमेरु, पारिजात, सन्तानक आदि कल्पवृक्षों के पुष्पों की मनोहर वर्षा हो रही हो।

ऋद्धि—ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ध्यानसिद्धिपरमयोगीश्वराय नमो नमः स्वाहा।

Thy divine utterances shower from the sky,
Like petals of celestial flowers,
Accompanied with gentle breezes
Abounding in fragrant water drops. 33

शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ।
प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥

तुम तन भामण्डल जिनचंद, सब दुतिवन्त करत है मंद ।
कोटि संख रवितेज छिपाय, शशि निर्मल निशि करै अछाय ॥

अर्थ—हे भगवन् ! आपके शरीर से निकली हुई कान्ति का गोलाकार मण्डल यानी भा-मण्डल जगत् के सभी प्रकाशमान पदार्थों की कांति को फीका कर देता है । करोड़ों सूर्यों के एकत्रित प्रकाश से भी अधिक प्रकाशमान आपके भामण्डल की प्रभा से चाँदनी रात भी फीकी हो जाती है यानी भामण्डल का प्रकाश सूर्य और चन्द्र से भी अधिक होता है ॥ ३४ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लोसहिपत्ताणं ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पद्मावत्यै देव्यै नमो नमः स्वाहा ।

O Lord ! Thy halo surpasses lustre of worlds,
Outshining the night decorated with moon,
Thy halo shining more than millions suns
Surpasses the lustre of all luminaries. 34

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः,
सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-
भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

स्वर्ग मोक्ष मारग संकेत, परम धरम उपदेशन हेत।
दिव्य वचन तुम खिरैं अगाध, सब भाषागर्भित हितसाध ॥

अर्थ—हे परमेश्वर ! आपकी दिव्यवाणी स्वर्ग मोक्ष का मार्ग बताने वाली तथा जगत के लिए हितकर सद्धर्म, सात तत्व, नौ पदार्थ आदि का यथार्थ विशद कथन करनेवाली एवं श्रोताओं की सर्व-भाषामयी होती है ॥३५॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं ।

मंत्र—ॐ नमो जयविजयापराजिते महालक्ष्मी अमृतवर्षिणि अमृतस्राविणि अमृतं भव भव वषट् सुधायै स्वाहा ।

O Lord ! Thy voice is sought by those
Desirous of emancipation and salvation.
Thy voice alone can expound truth of religion
Transformed in all the languages of all. 35.

उन्निद्रहेमनवपंकजपुञ्जकान्ती,
पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्त:,
पद्मानि तत्र विबुधा परिकल्पयन्ति ॥३६॥

विकसित सुवरन कमलदुति, नवदुति मिलि चमकाहिं ।
तुम पद पदवी जहँ धरैं, तहँ सुर कमल रचाहिं ॥

अर्थ—हे जिनेन्द्र ! विहार करते समय विकसित सुवर्ण कमल की कान्ति को अपने चरणों के नखों (नाखूनों) की कान्ति से सुन्दर कर देनेवाले आपके चरण जहाँ-जहाँ पड़ते हैं वहाँ-वहाँ पर देव प्रथम ही सुवर्णमय कमल बनाते जाते हैं ॥३६ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं ।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्डस्वामिन् आगच्छ आगच्छ आत्ममंत्रान् आकर्षय आकर्षय आत्ममंत्रान् रक्ष रक्ष परमंत्रान् छिन्द छिन्द मम समीहितं कुरु कुरु स्वाहा ।

O Lord ! They feet creates water-lilies
Having lustre of new golden lotuses.
Charm is imparted to them all
By the lustre of Thy shining nails. 36.

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥

जैसी महिमा तुम विषैं, और धरें नहिं कोय ।
सूरज में जो जोति है, नहिं तारागण होय ॥

अर्थ—हे जिनेन्द्र देव! इस प्रकार धर्म उपदेश देते समय अष्ट प्रातिहार्य रूप जैसी विभूति आपकी होती है उस तरह की विभूति अन्य किसी धर्म-उपदेशक के उपदेश करते समय नहीं होती। ठीक है, जैसी अन्धकारनाशिनी प्रभा सूर्य की होती है वैसी चमकते हुए तारों की भी नहीं होती ॥ ३७ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं ।

मंत्र—ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ॐ ह्रीं मनोवांछितसिद्ध्यै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा ।

O Lord ! The glory Thou atlaineth in precepts
None else has attained yet,
How can lustre of moon and stars match
With sun's rays removing darkness around. 37

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-
मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।
ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ।।३८।।

मद अवलिप्त कपोलमूल अलिकुल झंकारै,
तिन सुन शब्द प्रचण्ड क्रोध उद्धत अति धारै ।
कालवरन विकराल कालवत सम्मुख आवै,
ऐरावत सौ प्रबल सकल जन भय उपजावै ।।
देखि गयन्द न भय करै, तुम पद महिमा लीन ।
विपतिरहित संपति सहित, बरतैं भक्त अदीन ।।

अर्थ—हे प्रभो ! अपने कपोल (गाल) से झर रहे मद पर गूँजते हुए भौंरों की गुञ्जार सुनकर जिसको प्रचण्ड क्रोध आ गया है, ऐसे मदोन्मत्त ऐरावत-जैसे हाथी को देखकर भी आपके आश्रित भक्तों को जरा भी भय नहीं होता ।। ३८ ।।

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणवलीणं ।

मंत्र—ॐ नमो भगवते अष्ट महानागकुलोच्चाटिनि कालदष्टमृतकोत्थापिनि परमंत्रप्रणाशिनि देवि शासनदेवते ह्रीं नमो नमः स्वाहा ।

O Lord ! Those who worship Thee,
Are not afraid of the fury of elephant,
Whose anger increases by buzzing bees
Hovering over his rutted temples. 38

भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-

मुक्ताफल-प्रकर-भूषित - भूमिभागः ।

बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,

नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥

अति मदमत्त गयन्द कुम्भथल नखन विदारै,

मोती रक्त समेत डारि भूतल सिंगारै।

बाँकी दाढ़ विशाल वदन में रसना लोलै,

भीम भयानक रूप देखि जन थरहर डोलै॥

ऐसे मृगपति पद तलैं, जो नर आयो होय।

शरण गहे तुम चरण की, बाधा करै न सोय॥

अर्थ—हे विभो ! हाथी के मस्तक को अपने नाखूनों से फाड़ कर उसके रक्त से भीगे गजमुक्ताओं (मोतियों) से पृथ्वी सजा देनेवाले तथा शिकार करने के लिये तैयार विकराल सिंह भी अपने पंजों में आये हुए उस मनुष्य पर आक्रमण नहीं करता जो आपके चरणों की शरण ले लेता है ॥ ३९ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं वचवलोणं।

मत्र—ॐ नमो एषु वृत्तेषु वर्द्धमान तव भयहरं वृत्तिवर्णा-येषु मंत्रा पुनः स्मर्तव्या अतो नापरमत्रनिवेदनाय नमः स्वाहा।

O Lord ! Those who have taken resort in Thee

Are not attacked even by lions,

Ready for pouncing after tearing elephant's head

And spreading pearls with blood on earth. 39

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,
दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघित्सुमिव सम्मुखमापतन्तं,
त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

प्रलय पवन कर उठी आग जो तास पटंतर,
वमैं फुलिंग शिखा तुङ्ग परजलैं निरंतर।
जगत समस्त निगल्ल भस्म कर देगी मानो,
तड़तड़ात दव अनल जोर चहुँ दिशा उठानो॥
सो इक छिन में उपशमे, नाम नीर तव लेत।
होय सरोवर परिणमै, विकसित कमल समेत॥

अर्थ—हे भगवन्! प्रलय के समय तेज वायु से धधकती हुई वन की जिस भयानक अग्नि से ऐसी भयानक चिनगारियाँ बहुत ऊँचे निकल रही हों मानो सारे संसार को भस्म कर डालेंगी, उसके सामने आ जाने पर भी हृदय से लिया हुआ आपका नाम-रूपी जल तत्काल उसको बुझाकर शान्त कर देता है॥ ४० ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं।
मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं अग्निमुपशमनं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

The conflagration of the forest
Fanned by the doomsday winds
And advancing emiting burning sparks,
Is extinguished by water of Thy name. 40

रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं,
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशङ्क-,
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

कोकिल-कंठ-समान श्याम तन क्रोध जलंता,
रक्त नयन फुंकार मार विषकण उगलंता।
फण को ऊँचौ करै वेग हा सन्मुख धाया,
तब जन होय निशंक देखि फणिपति को आया॥
जो चाँपे निज पगतलै, व्यापै विष न लगार।
नाग-दमनि तुम नाम की, है जिनके आधार॥

अर्थ—हे विश्वपते ! उन्मत्त कोयल के कंठ के समान काला, क्रोध से उद्धत, लाल नेत्र किये और फण को ऊँचा उठाये भयानक सर्प भी आक्रमण करे तो भी वह मनुष्य निःशंक (निश्चिन्त) बना रहता है जिसके हृदय में आपके पवित्र नामरूपी सर्प-दमन करनेवाली अमोघ औषधि विद्यमान है ॥ ४१ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं ।

मंत्र—ॐ नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः जलदेवि कमले पद्महृदे निवासिनी पद्मोपरि-संस्थिते सिद्धि देहि मनोवांछितं कुरु कुरु स्वाहा ।

Man, who submits to Thee his heart,
Is not affected by black cobra,
Having its hood expanded in anger,
Black like the throat of a cuckoo. 41

वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभीमनाद-

माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ।

उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,

त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

जिस रनमाहिं भयानक शब्द कर रहे तुरङ्गम,

घन से गज गरजाहिं मत्त मानो गिरि जंगम।

अति कोलाहल माँहि बात जस नाँहि सुनीजै,

राजन को परचण्ड देखि बल धीरज छीजै॥

नाथ तिहारे नामतैं, अघ छिनमाहिं पलाय।

ज्यों दिनकर परकाशतैं, अन्धकार विनशाय॥

अर्थ—हे विश्व-उद्धारक देव ! जहां घोड़े भयानक हींस रहे हों, हाथी चिंघाड़ रहे हों, (भयानक अस्त्र शस्त्र चल रहे हों), घमासान की लड़ाई से उड़ती हुई धूल ने सूर्य का प्रकाश भी छिपा दिया हो, ऐसी भयानक युद्धभूमि में आपका स्मरण करने से बलवान् राजाओं की सभी सेना ऐसे फट जाती है जैसे सूर्य उदय होने से अन्धकार॥ ४२॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं।

मंत्र—ॐ नमो णमिऊण विषधरविषप्रणाशन-रोग-शोक दोषग्रह-कप्पदुमच्चजाई सुहनामगहण सकलसुहृदे ॐ नमः स्वाहा।

Like the darkness dispelled by sun,

Armies with horses and elephants

Of powerful kings in the battlefield.,

Are dispersed on reciting Thy name. 42

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा-
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

मारे जहाँ गयन्द, कुम्भ हथियार बिदारे,
उमगे रुधिर प्रवाह वेग जलसम विस्तारे।
होंय तिरन असमर्थ महाजोधा बलपूरे,
तिस रन में जिन तोय भक्त जे हैं नर सूरे॥
दुर्जन अरि कुल जीतके, जय पावैं निकलंक।
तुम पद-पंकज मन बसे, ते नर सदा निशंक॥

अर्थ—हे विश्व-विजेता ! जिस युद्ध में भाले-बर्छियों के द्वारा छिन्न भिन्न हाथियों के शरीर से निकले हुए रुधिर के प्रवाह को पार करने में बड़े बड़े शूरवीर योद्धा भी व्याकुल हो जाते हैं, ऐसे भयानक विकराल युद्ध में आपके चरणों की शरण लिये हुए भक्त पुरुष दुर्जन शत्रु को भी जीत लेते हैं ॥४३॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं

मन्त्र—ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी जिनशासन-सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रवविनाशिनी धर्मशान्तिकारिणी नमः शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

O Lord ! Who take resort to Thy feet
Get victory against victorious foes,
Where warriors engaged in river of blood
And elephants pierced with pointed spears. 43

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ।
रङ्गत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥४४॥

नक्र चक्र मगरादि मच्छकरि भय उपजावै,
जामे बड़वा अग्नि दाहतें नीर जलावै।
पार न पावैं जास, थाह नहिं लहिए जाकी,
गरजे अति गम्भीर लहर की गिनति न ताकी ॥

सुखसों तिरैं समुद्र को, जे तुम गुण सुमराहिं ।
लोल कलोलन के शिखर, पार यान ले जाहिं ॥

अर्थ—हे तरण—तारण देव ! जहाँ भयानक नाकू, मगर, बड़े मच्छ (ह्वेल शार्क आदि मछली) आदि जलचर जीवों ने क्षोभ मचा रक्खा हो तथा बडवा अग्नि से जिसका जल बहुत गर्म हो गया हो ऐसे भयानक समुद्र में विकराल तूफान के समय आपका स्मरण करने से मनुष्य अपने जलयान (जहाज) को उठती हुई तरंगों के ऊपर से बिना किसी कष्ट के ले जाते हैं ॥४४॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं ।

मन्त्र—ॐ नमोरावणाय विभीषणाय कुम्भकर्णाय लङ्काधिपतये महाबलपराक्रमाय मनश्चिन्तितं कुरु कुरु स्वाहा ।

Ocean, having dreadful fire,
Agitated with terrific alligators,
Is freely crossed with their ships
By those who sincerely remember Thee. 44

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोमृतदिग्धदेहाः,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥

महा जलोदर रोग, भार पीड़ित नर जे हैं,
वात, पित्त, कफ, कुष्ठ आदि जो रोग गहे हैं।
सोचत रहैं उदास नाहिं जीवन की आशा,
अति घिनावनी देह धरैं दुर्गन्धनिवासा।
तुम पद पंकज धूल को, जो लावै निज अंग।
ते नीरोग शरीर लहि, छिनमें होंय अनंग॥

अर्थ—भो अजरामर प्रभो! जलोदर रोग के कारण जो व्यक्ति पेट के भार से खेद-खिन्न हैं, भयानक रोग के कारण जिनकी दशा शोचनीय है, जिनके जीवित रहने की आशा नहीं रही, ऐसे रोगीजन यदि आपके चरणों की धूल अपने शरीर से लगा लें तो वे नीरोग होकर कामदेव के समान सुन्दर हो जाते हैं॥ ४५ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं।

मन्त्र—ॐ नमो भगवती क्षुद्रोपद्रवशान्तिकारिणी रोगकष्ट-ज्वरोपशमनं कुरु कुरु स्वाहा।

Those, drooping with terrible dropsy
And who have given up hope of life,
And have reached a deplorable condition,
Turn cupid with the dust of Thy feet. 45

आपादकण्ठमुरुश्रृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति ॥४६॥

पाँव कंठतैं जकर बाँध साँकल अति भारी,
गाढ़ी बेड़ी पैर माँहि जिन जाँघ बिदारी।
भूख, प्यास, चिन्ता शरीर दुख जे बिललाने,
शरण नाहिं जिन कोय भूप के बन्दीखाने॥
तुम सुमरत स्वयमेव ही, बन्धन सब कट जाहिं,
छिनमें ते सम्पत्ति लहैं, चिंता भय बिनसाहिं॥

अर्थ—हे बन्ध-विमोचन ! बन्दीघर (जेल) में जो पैर से कंठ तक भारी जंजीर से जकड़े हुए हों, बड़ी बेड़ी की कोर से जिनकी टाँगें छिल गई हों, ऐसे मनुष्य आपके नाम को स्मरण करते ही तुरन्त स्वयं बन्धन और भय से छूट जाते हैं॥ ४६ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो बड्ढमाणाणं।

मन्त्र—ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः जः जः क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रौं क्ष्रः क्ष्रयः स्वाहा।

Those, fettered with heavy chains
With shanks lacerated with gyves,
Instantly get rid of the bonds
By muttering Thy name day and night. 46

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-

संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

महामत्त गजराज और मृगराज दवानल,

फणपति रण परचण्ड नीरनिधि रोग महाबल ।

बन्धन ये भय आठ डरपकर मानो नाशैं,

तुम सुमरत छिनमाहिं अभय थानक परकाशैं ॥

इस अपार संसार में, शरन नाहिं प्रभु कोय ।

तातैं तुम पद-भक्त को, भक्ति सहायी होय ॥

अर्थ—हे संकट-निवारक प्रभो ! जो मनुष्य आपके इस स्तवन को पढ़ता है उसके, मदोन्मत्त हाथी, सिंह, दावानल (प्रचण्ड अग्नि), सर्प, युद्ध, समुद्र, जलोदर आदि रोग तथा बन्दीघर के हथकड़ी-बेड़ी आदि के बन्धन के भय स्वयं तत्काल डर कर नष्ट हो जाते हैं ॥ ४७ ॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाय दणाणं बड्ढमाणाणं ।

मंत्र—ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रः यक्ष श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ।

Man, who chants Thy name,

Is liberated in no time

From the fear of wild animals,

Snakes, oceans and diseases. 47

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां
भक्त्या मया विविधवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं
तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

यह गुणमाल विशाल नाथ तुम गुणन सँवारी,
विविध वर्णमय पुहुप गूँथ मैं भक्ति बिथारी।
जो नर पहिरैं कण्ठ, भावना मनमें भावें,
मानतुङ्ग ते निजाधीन शिवलक्ष्मी पावें।
भाषा भक्तामर कियो, 'हेमराज' हितहेत।
जे नर पढ़ें सुभावसों, ते पावैं शिवखेत॥

अर्थ—हे जिनेन्द्र ! विविध वर्णमय (अक्षरमय, रंगमय) आपके गुणों से गुँथी हुई जो मैंने भक्ति से यह स्तुति-रूपी माला बनाई है, इसको जो पुरुष अपने गले में सतत धारण करता है, उस उच्च ज्ञानी या उच्च सन्मानी व्यक्ति को मुक्ति लक्ष्मी शीघ्र प्राप्त होती है ॥४८॥

ऋद्धि—ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं।

मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं णमो भगवते महतिमहावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा। ॐ नमो बंभचारिणे अट्ठारह सहस्स सीलांगरथधारिणे नमः स्वाहा।

O Jinendra! whoever resorts
To this Garland of orisons with devotion,
And always keeps this around his neck,
Is bestowed with Goddess of wealth. 48

बुद्ध्यादिनामभिर्विबुधार्चितपादपीठ

स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम्

ॐ नमो भगवते

परमतत्वार्थभावकार्यसिद्धेः

क्रास्वरूपाय नमः

सहस्रमहीनुम् ३

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति
तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु ६

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठबुद्धीणं।

पापंक्षणात्क्षयमुपैतिशरीरभाजाम्।
सूर्यांशुभिन्नमिवशार्वरमन्धकारम् ७
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं।

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ।
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ८

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ९

नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।

तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति १०

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥
ॐ नमो भगवते

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत।
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥१२॥
ॐ नमो भगवते
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धीणं

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि-

निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।

बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य

यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिः
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूर
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥
ॐ ह्रीं जयाय नमः

नास्तिकदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र लोके १७
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग महाणिमित्त कुश-
ॐ न मो अ
जि त श त्रु
प रा ज यं
कु रु २ स्वा हा
नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् १८
ॐ
स्तंभय स्तंभ
य स्वाहा ।

किंशर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमःसु नाथ
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः १९
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
नमः स्वाहा।

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि २०
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं
ॐ ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ ॐ
ठः ठः नमः स्वाहा।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं

तुभ्यं नमस्त्रि भुवनार्त्तिहराय नाथ
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ॐ नमो

को विस्मयो ... । स्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं नमो

जं जं जं जं जं

उन्मूलय स्वाहा ।

स्वप्नान्तरेऽपि भवता न कदाचिदपीक्षितोऽसि २७

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥३०

छत्रत्रयंतवविभातिशशाङ्ककान्त-
मुच्चैःस्थितंस्थगितभानुकरप्रतापम्
प्रख्यापयत्त्रिजगतःपरमेश्वरत्वम् ३१
ॐ ह्रीं अर्हं णमोघोरगुणपरक्कमाणं
ॐ ह्रीं क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा।
क्रौं ह्रीं क्रौं ह्रीं क्रौं ह्रीं
क्रौं ह्रीं क्रौं ह्रीं क्रौं ह्रीं
क्रौं ह्रीं

गम्भीरतारवपूरितदिग्विभाग-
स्त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः
खेदुन्दुभिर्ध्वनतितेयशसःप्रवादी ३२
ॐ ह्रीं अर्हं णमोघोरगुणबंभचारिणं
सर्वसिद्धिबुद्धिंवांछाकुरु२स्वाहा
सौं सौं सौं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः

सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः।

दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-

भाषास्वभावपरिणामगुणैः प्रयोज्यः॥ ३५॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लो सहिपत्ताणं ॐ णमो जय

ॐ नमो गजगमने सर्वकल्याण

ॐ ह्रीं श्री

ॐ

उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती

पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ।

पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः

पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति॥ ३६॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं ॐ ह्रीं

ॐ	ह्रां	ह्रीं	श्रीं
म	ह्रां	ह्रीं	क्लीं
च	ह्रः	ह्रूं	ह्रौं
प	य	र	ह

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र ।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं ॐ नमो
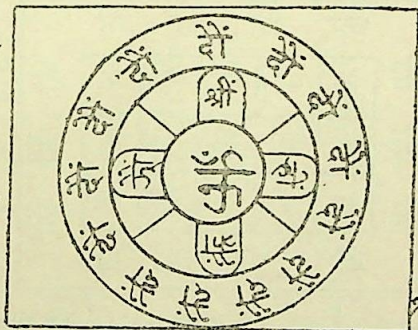
भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्त-

मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः।

बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि

नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ३९

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचबलीणं ॐ

कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह-
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा-
स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ४३

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवाणं ॐ नमो चक्रे-
श्वरीदेवी चक्रधारिणी जिनशा-
सनसेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रवविनाशिनी
धर्मशांतिकारिणी नमः कुरु कुरु स्वाहा।

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-
पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ४४

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमीयसवाणं ॐ नमो
रावणाय विभीषणाय कुंभकरणा-
य लंकाधिपतये महाबल पराक्रमाय
मनश्चिंतितं कुरु कुरु स्वाहा।

उद्भूत भीषण जलोदर भार भुग्नाः
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाण-
आपाद कण्ठमुरु शृङ्खल वेष्टिताङ्गा
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-

संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम्।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

ॐ अर्हं णमो घड्ढु माणाणं ।

भयहर भयहर भयहर भयहर भयहर
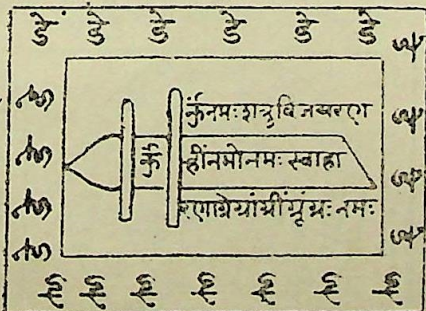
महामन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः शांतिनाथाय शांति-कराय, सर्वपापप्रणाशनाय, सर्वविघ्नविनाशनाय, सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय, सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा 'भम' सर्वशांतिं कुरु वषट् स्वाहा ॥१०८॥

भक्तामर स्तोत्र के मन्त्र

भक्तामर स्तोत्र के ४८ श्लोकों के जो ४८ मन्त्र हैं उनकी साधन विधि तथा फल क्रमशः नीचे लिखे अनुसार हैं :—

१—प्रतिदिन ऋद्धि और मन्त्र १०८ बार जपने से तथा यन्त्र पास रखने से सब तरह के उपद्रव दूर होते हैं।

२—काले वस्त्र पहन कर, काले आसन पर दंडासन से बैठ कर, काली माला से पूर्व दिशा की ओर मुख करके प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि, मंत्र २१ दिन तक अथवा ७ दिन तक प्रतिदिन १००० जपना चाहिये। इससे शत्रु तथा शिरः-पीड़ा नष्ट होती है। यन्त्र पास रखने से शत्रु की नजर बन्द होती है। उन दिनों में एक बार भोजन करना चाहिये तथा प्रतिदिन नमक से होम करना चाहिए।

३—कमलगट्टा की माला से ऋद्धि और मन्त्र ७ दिन तक प्रतिदिन १०८ बार जपना चाहिये। होम के लिये दशांग धूप हो

और गुलाब के फूल चढ़ाये जावें। चुल्लू में जल मंत्रित करके २१ दिन तक मुख पर छींटे देने से सब प्रसन्न होते हैं। यन्त्र पास में रखने से शत्रु की नजर बन्द हो जाती है।

४—सफेद माला द्वारा ७ दिन तक प्रतिदिन १००० बार ऋद्धि और मंत्र जपना चाहिये, सफेद फूल चढ़ाने चाहियें। पृथ्वी पर सोना तथा एकाशन करना चाहिए। यदि कोई मछली पकड़ रहा हो तो २१ कंकड़ियाँ लेकर प्रत्येक कंकड़ी ७ बार मंत्र पढ़ कर जल में डाली जावे तो एक भी मछली जाल या काँटे में न आवेगी।

५—पोला वस्त्र पहन कर सात दिन तक १००० ऋद्धि, मन्त्र प्रतिदिन जपना, पीले फूल चढ़ाना तथा कुन्दरू की धूप जलाना चाहिये। जिसके नेत्र दुखते हों, उसे दिन भर भूखा रख कर शाम के समय २१ बार मन्त्र से मंत्रित करके बतासे जल में घोल कर पिलाये जावें या नेत्रों पर छींटे दिये जावें तो नेत्र को आराम हो जाता है। मंत्रित जल कुँए में छिड़कने से लाल कीड़े कुँए में नहीं होने पाते। यन्त्र अपने पास रखना चाहिय।

६—२१ दिनों तक प्रतिदिन १००० जाप करने से और यन्त्र अपने पास रखने से विद्या प्राप्त होती है। बिछुड़ा हुआ व्यक्ति आ मिलता है। मन्त्र ऋद्धि का जाप लाल वस्त्र पहन कर करना चाहिए, पृथ्वी पर सोना तथा एक बार भोजन करना चाहिये, लाल फल चढ़ाने चाहिये तथा कुन्दरू की धूप खेनी चाहिये।

७—प्रतिदिन हरी माला से १०८ बार ऋद्धि मन्त्र २१ दिन जपना चाहिये। ऐसा करने से तथा यन्त्र को गले में बाँधने से साँप का विष उतर जाता है। और भो किसी तरह का विष

प्रभाव नहीं करता। यदि १०८ बार ऋद्धि मन्त्र से कंकड़ी मंत्रित करके सर्प के शिर पर मारी जावे तो सर्प कीलित हो जाता है। लोबान की धूप खेनी चाहिये। यन्त्र हरा होना चाहिये।

८—अरीठे के बीजों की माला के द्वारा २१ दिन तक १००० जाप करने से तथा यन्त्र को अपने पास रखने से सब प्रकार का अरिष्ट दूर होता है। यदि नमक के ७ छोटे टुकड़ों को १०८-१०८ बार मन्त्र पढ़कर मंत्रित करके पीड़ायुक्त किसी अंग को झाड़ा जावे तो पीड़ा दूर हो जाती है। घी और गुग्गुल की धूप खेनी चाहिये तथा नमक की डली से होम करना चाहिये।

९—एक सौ आठ बार ऋद्धि मन्त्र द्वारा चार कंकड़ियों को मंत्रित करके यदि उनको चारों दिशाओं में फेंका जावे तो चोर डाकू आदि का किसी तरह का भय नहीं रहता।

१०—पीली माला से प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मन्त्र का ७ या १० दिन जाप करने से तथा यन्त्र पास में रखने से कुत्ते के काटने का विष उतर जाता है। नमक की ७ डलियों को, प्रत्येक को १०८ बार मन्त्र द्वारा मंत्रित करके खिलाया जाय तो कुत्ते का विष असर नहीं करता। धूप कुन्दरू की होनी चाहिये।

११—लाल माला लेकर २१ दिन तक (प्रतिदिन १०८ बार) बैठ कर या खड़े रह कर सफेद माला से १०८ बार जपने पर (दीप, धूप, नैवेद्य, फल लिये हुए) एवं यंत्र अपने पास रखने से जिसे अपने पास बुलाना हो वह आ जाता है। धूप कुन्दरू की हो।

१२—लाल माला से मन्त्र और ऋद्धि का जाप ४२ दिन तक प्रतिदिन १००० करना चाहिये। दशांग धूप खेनी चाहिये। यन्त्र अपने पास रखने तथा मंत्र द्वारा १०८ बार तेल मंत्रित करके हाथी को पिलाने पर हाथी का मद उतर जाता है।

१३—पीली माला के द्वारा ७ दिन प्रतिदिन १००० ऋद्धि मन्त्र का जाप करना चाहिये, एक बार भोजन तथा पृथ्वी पर शयन करना चाहिये। यन्त्र पास रखने से तथा ७ कंकड़ी लेकर प्रत्येक को १०८ बार मन्त्र से मंत्रित करके चारों दिशाओं में फेंकने से चोरों का भय नहीं रहता, मार्ग से और भी कोई भय नहीं आने पाता।

१४—सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक को २१ बार ऋद्धि मन्त्र द्वारा मंत्रित करके चारों ओर फेंकने से तथा यन्त्र अपने पास रखने से व्याधि, शत्रु आदि का भय नष्ट हो जाता है, लक्ष्मी प्राप्त होती है तथा वात रोग नष्ट होता है।

१५—ऋद्धि मंत्र द्वारा २१ बार तेल मंत्रित करके उस तेल को मुख पर लगाने से राजदरबार में प्रभाव बढ़ता है, सौभाग्य और लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। १४ दिन तक लाल माला से १००० जाप करना चाहिए। दशांग धूप खेनी चाहिए। एक बार भोजन करना चाहिए।

१६—हरी माला से प्रतिदिन १००० ऋद्धि मंत्र का जाप ९ दिन तक करे, कुन्दरू की धूप खेवे। यंत्र पास में रखने से तथा मन्त्र का १०८ बार जाप करने से राजदरबार में प्रति-पक्षी की हार होती है, शत्रु का भय नहीं रहता।

१७—सफेद माला से प्रतिदिन १००० ऋद्धि मंत्र का जाप ७ दिन तक करे, चन्दन की धूप खेवे। यंत्र पास रखने से तथा शुद्ध अछूता जल २१ बार मंत्र कर पिलाने से पेट की असाध्य पीड़ा, वायुशूल, वायुगोला आदि मिट जाते हैं।

१८—लाल माला द्वारा प्रतिदिन ऋद्धि मंत्र का १००० जाप ७ दिन तक करना चाहिए, दशांग धूप खेनी चाहिये, एक बार भोजन करना चाहिये। यंत्र को पास में रखने से तथा १०८ बार मंत्र जाप करने से शत्रु की सेना का स्तम्भन होता है।

१९—यन्त्र अपने पास रखने से तथा ऋद्धि मंत्र का १०८ बार जाप करने से अपने ऊपर दूसरे के द्वारा प्रयोग किया गया मंत्र प्रयोग, जादू, मूठ, टोटका आदि का प्रभाव नहीं होने पाता, न उच्चाटन का डर रहता है।

२०—यन्त्र को अपने पास रखने से तथा मन्त्र को १०८ बार जपने से सन्तान प्राप्त होती है, लक्ष्मी का लाभ होता है, सौभाग्य बढ़ता है, विजय मिलती है, बुद्धि बढ़ती है।

२१—यन्त्र अपने पास रखने से तथा प्रतिदिन १०८ बार ऋद्धि मन्त्र ४२ दिन तक जपने से सब अपने अधीन हो जाते हैं।

२२—यन्त्र गले में बाँधने से तथा हल्दी की गाँठ को २१ बार मन्त्र द्वारा मंत्रित करके चबाने से भूत, पिशाच, चुड़ैल आदि दूर हो जाती हैं।

२३—पहले १०८ बार मन्त्र जप कर अपने शरीर की रक्षा करे फिर जिसको प्रेत बाधा हो उसे झाड़े, यन्त्र पास रक्खे तो प्रेत बाधा दूर होती है।

२४—प्रति दिन १०८ बार मन्त्र जपना चाहिये। २१ बार मन्त्र पढ़कर राख मंत्रित करके उसे सिर पर लगाने से शिरः-पीड़ा दूर हो जाती है।

२५—ऋद्धि और मन्त्र के जपने से तथा यन्त्र को पास में रखने से धीज उतरती है तथा आराधक पर अग्नि का प्रभाव नहीं होता।

२६—ऋद्धि मंत्र द्वारा १०८ बार तेल मंत्रित करके सिर पर लगाने से तथा यन्त्र अपने पास रखने से आधा शीशी आदि शिर के रोग दूर हो जाते हैं। उस तेल की मालिश करने से तथा मंत्रित जल पिलाने से प्रसूति शीघ्र आराम से हो जाती है।

२७—काली माला से ऋद्धि मन्त्र का जाप करने से, प्रतिदिन एक बार अलोना भोजन करने से तथा काली मिर्च से हवन करने पर शत्रु का नाश होता है। ऋद्धि और मन्त्र का जाप करते रहने से तथा यन्त्र अपने पास रखने से शत्रु मंत्र-आराधना में कुछ हानि नहीं पहुँचा सकता।

२८—ऋद्धि मन्त्र की आराधना से और यन्त्र पास में रखने से व्यापार में लाभ, विजय, सुख प्राप्त होता है, सब कार्य सिद्ध होते हैं।

२९—ऋद्धि तथा मंत्र के द्वारा १०८ बार मंत्रित जल पिलाने से और यंत्र को पास रखने से दुखती हुई आँखें अच्छी हो जाती हैं, बिच्छू का विष उतर जाता है।

३०—मंत्र की आराधना करने तथा यन्त्र अपने पास रखने से शत्रु का स्तम्भन होता है, चोर, सिंहादि का भय नहीं रहता।

३१—यन्त्र अपने पास रखने तथा मन्त्र के जाप से राज्य में सम्मान होता है, दाद, खुजली आदि चर्म रोग नहीं होते।

३२—कुमारी कन्या के द्वारा काते हुए सूत को ऋद्धि मन्त्र द्वारा मंत्रित करके उस सूत को गले में बाँधने से और यन्त्र पास में रखने से संग्रहणी आदि पेट के रोग दूर हो जाते हैं।

३३—कुमारी कन्या द्वारा काते हुए सूत को ऋद्धि मंत्र द्वारा २१ वार मंत्रित करके, उस सूत का गंडा गले में बाँधने से, झाड़ा देने तथा यंत्र पास में रखने एकांतरा ज्वर, तिजारी, ताप आदि रोग दूर होते हैं। गुग्गुल मिश्रित घी की धूप खेनी चाहिए।

३४—कसूमके रंगमें रँगे हुए सूत को ऋद्धि मंत्र द्वारा १०८ बार मंत्रित करके तथा उसको गुग्गुल का धूप देकर बाँधने से और यन्त्र पास में रखने से गर्भ असमय में नहीं गिरता।

३५—ऋद्धि मन्त्र की आराधना करने यन्त्र पास रखने से दुर्भिक्ष, चोरी, मरी, मिरगी, राजभय आदि नष्ट होते हैं। इस मंत्र की आराधना स्थानक में करनी चाहिए और यंत्र का पूजन करें।

३६—ऋद्धि मंत्र की आराधना से और यंत्र पास रखने से सम्पत्ति लाभ होता है। विधान—१२०० जाप लाल पुष्प द्वारा करना चाहिए और यंत्र का पूजन भी साथ करना चाहिये।

३७—ऋद्धि मन्त्र द्वारा २१ बार पानी मंत्र कर मुँह पर छींटने से और यन्त्र पास रखने से दुर्जन वश होता है, उसकी जीभ का स्तम्भन होता है।

३८—ऋद्धि मंत्र जपने से और यंत्र पास रखने से जन का लाभ होता है और हाथी वश में होता है।

३९—ऋद्धि मंत्र जपने और यन्त्र पास रखने से सर्प और सिंह का डर नहीं रहता तथा भूला हुआ रास्ता मिल जाता है।

४०—ऋद्धि मंत्र द्वारा २१ बार पानी मंत्रित कर घर के चारों ओर छींटने से और यंत्र पास रखने से अग्नि का भय मिटता है।

४१—ऋद्धि मंत्र के जपने से और यंत्र के पास रखने से राजदरबार में सम्मान होता है और झाड़ा देने से सर्प का विष

उतरता है। काँसे के कटोरे में जल १०८ बार मंत्र कर पानी पिलाने से विष उतर जाता है।

४२—ऋद्धि मंत्र की आराधना से और यंत्र के पास रखने से युद्ध का भय नहीं रहता।

४३—ऋद्धि मंत्र की आराधना और यंत्र पूजन से सब प्रकार का भय मिटता है, युद्ध में हथियार की चोट नहीं लगती तथा राजद्वारा धन-लाभ होता है।

४४—ऋद्धि मंत्र की आराधना और यंत्र के पास रखने से आपत्ति मिटती है, समुद्र में तूफान का भय नहीं होता, समुद्र पार कर लिया जाता है।

४५—ऋद्धि मंत्र जपने और यंत्र पास रखने तथा उसकी प्रतिदिन त्रिकाल पूजा करने से सर्व रोग नष्ट होते हैं और उपसर्ग दूर होता है।

४६—ऋद्धि मंत्र जपने और यन्त्र पास रखने तथा उसकी त्रिकाल पूजा करने से कैद से छुटकारा होता है, राजा आदि का भय नहीं रहता है। प्रतिदिन १०८ बार जाप करना चाहिए।

४७—ऋद्धि मन्त्र की १०८ बार आराधना कर शत्रु पर चढ़ाई करने वाले को विजय लक्ष्मी प्राप्त होती है। शत्रु का नाश होता है, वैरी के शस्त्रों की धार व्यर्थ हो जाती है, बन्दूक की गोली, बरछी आदि के घाव नहीं हो पाते।

४८—प्रतिदिन १०८ बार २१ दिन तक मन्त्र जपने से और यन्त्र पास रखने से मनोवांछित कार्य की सिद्धि होती है, जिस को अपने अधीन करना हो उसका नाम चिंतन करने से वह व्यक्ति अपने वश होता है।

*

मन्त्र-साधना

अपनी कार्य-सिद्धि के लिये जैसे अन्य उपाय किये जाते हैं उसी प्रकार मन्त्र आराधना भी एक उपाय है। मन्त्रों द्वारा देव देवी अपने वश में किये जाते हैं, उन वशीभूत देवों के द्वारा अनेक कठिन कार्य करा लिये जाते हैं तथा मन्त्रों द्वारा मानसिक, वाचनिक, शारीरिक शक्ति में वृद्धि भी की जा सकती है।

परन्तु इतनी बात निश्चित है कि जब मनुष्य के शुभ कर्म का उदय होता है उसी दशा में यंत्र, मंत्र, तंत्र सहायक या लाभदायक हो सकते हैं, जब अशुभ कर्म का उदय हो, उस समय यंत्र, मन्त्र, तन्त्र काम नहीं आते। रावण ने अचल ध्यान से बहुरूपिणी विद्या सिद्ध की थी किन्तु लक्ष्मण के साथ युद्ध करते समय अशुभ कर्म के कारण वह विद्या रावण के काम नहीं आई इसलिये सदाचार, दान, व्रत पालन, परोपकार आदि शुभ कार्यों द्वारा शुभ कर्म संचय करते रहना चाहिये। श्रेष्ठ बात तो यह है कि समस्त सांसारिक कार्य छोड़ कर, राग-द्वेष की वासना से दूर होकर कर्म बन्धन से छुटकारा पाने के लिए शुद्ध आत्मा का ध्यान किया जावे, परन्तु यदि मनुष्य उस अवस्था तक न पहुँच सके तो उसे अशुभ ध्यान, अशुभ विचार, अशुभ कार्य छोड़कर, शुभ कार्य, शुभ विचार करने चाहियें। जहाँ तक हो सके अन्य व्यक्ति को दुःख, पीड़ा या हानि पहुँचाने के लिए मन्त्र का प्रयोग नहीं करना चाहिये। स्व-परहित तथा लोक कल्याण के लिये मन्त्र प्रयोग करना उचित है।

विधि

मन्त्र साधन करने के लिए किसी मन्त्रवादी विद्वान् से मन्त्र-साधन करने की समस्त विधि जान लेना आवश्यक है। बिना ठीक विधि जाने मन्त्र-साधन करने से कभी-कभी बहुत हानि हो जाती है, मस्तिष्क खराब हो जाता है, मनुष्य पागल हो जाते हैं।

मंत्र-साधन करने के दिनों में खान-पान शुद्ध सात्विक होना चाहिये, जहाँ तक हो सके एक बार शुद्ध सादा आहार करे।

उन दिनों में ब्रह्मचर्य से रहकर पृथ्वी पर सोना चाहिये।

शुद्ध धुले हुए वस्त्र पहन कर शुद्ध एकान्त स्थान में बैठना चाहिये, आसन शुद्ध होना चाहिये। सामने लकड़ी के पट्टे पर दीपक जलता रहना चाहिये और अग्नि में धूप डालते रहना चाहिये। विशेष मंत्र-साधन विधि में कुछ फेर-फार भी होता है।

यन्त्र को सामने चौकी पर रखना चाहिये।

यन्त्र ताँबे के पत्र पर उकेरा हुआ हो, अथवा भोजपत्र पर अनार की लेखनी से केसर के साथ लिखा हुआ हो।

मंत्र का उच्चारण शुद्ध होना चाहिये।

मंत्र जपते समय मन को इधर उधर न भटकाना चाहिये।

शरीर में एक आसन से अचल बैठे रहने की क्षमता होनी चाहिये।

साधन-विधि

वशीकरण—मंत्र सिद्ध करने के लिये वस्त्र, धोती, दुपट्टा, बनियान पीले रंग को होनी चाहिये, बैठने का आसन और जपने की माला भी पाली होनी चाहिए।

मारण—मंत्र जपते समय वस्त्र, आसन, माला काले रंग की होनी चाहिए।

धन लाभ—के लिये मंत्र-साधन में सफेद वस्त्र, सफेद आसन और सफेद मोती की माला होनी चाहिए।

आकर्षण—मंत्र-साधन में हरे वस्त्र, हरी माला और हरा आसन होना चाहिए।

मोहन में—लाल वस्त्र, लाल आसन और मूँगे की माला होनी चाहिए।

जिस मंत्र-साधन के लिए कोई दिशा न बतलाई गई हो उसका साधन पूर्व दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए।